बिहार के आधुनिक उद्योग के विकास में नारियों का महत्व

अनामिका

मगधं विवविवए ब्रोधगया

19वीं सदी में पूर्वार्ध्द तक बिहार के कुटीर और लघु उद्योग दृधंधों का विनाश हो गया॰ वृहत पैनाम पर अग्रेजी मालों के का आयात शुरू हुआ॰ रस्ते मालों से बाजरा पट गया॰ फलतः लघु उद्योग.धंधों के दिन लद गए॰ यूरोप से लौह. इस्पात के उत्पादों से मुंगेर का लौह इस्पात के लौह संयंत्र और बिहार का देशी लौह खनन भी प्रभावित हुआ॰ 1833 ईं॰ के चार्टर एक्ट द्वारा भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारिक एकाधिकार का अंत हो गया॰

1885 ई में पटना स्थित वाणिज्य दूत का कार्यालय बन्द कर दिया गया॰ फ्रांसीसियों ने तो पहले ही अनेकों व्यापारिक कारोबार से खुद को अलग कर लिया था॰ 1825 ई॰ में डचों ने बिहार में अपनी कोठियों को अंग्रेजों को दे दिया॰ 1845 ई में डचों ने भी यही काम किया॰ फलतः आधुनिक उद्योग के विकास का रास्ता खुल गया॰ टाटा लौह एवं इस्पात उद्योग की स्थापना न केवल बिहार बल्कि भारतीय इतिहास में मील का पत्थर साबित हुआ॰ 1907 ई में ६ लौहा और 1913 ई में इस्पाक का उत्पादन करने लगी थी॰ 1916 ई में लगभग 40000 लोग इसमे कार्यरत थे॰
फोरमैन समेत तमाम उच्च पदों पर यूरोपीय और अमेरिकी काबिज थे॰ कुशल श्रमिक मुख्यतः पंजाब और संयुक्त प्रांत से लाए गए थे॰ तथा सिंहभूम और आसपास के जिलों से आदिवासी दलित.पिछड़े अकुशल श्रमिकों के रुप में खटते थे॰ अधिकाश श्रमिक स्थायी थे॰ दूसरा बड़ा उद्योग जमापुर का ईस्टर्न इंडिया रेलवे वर्कशाप्स था॰यहां काम करनेवाले लोगों की संख्या लगभग 12000 थी॰ अधिकांश स्थायी श्रमिक आसपास के गांवों से भर्ती किये गये थे॰ एक अन्य उद्योग मुंगेर में पेनिन्सुलर दो बैकों कंपनी था॰जिसमे लगभग 2000 श्रमिक कार्यरत थे और उनकी भर्ती मुख्यतः मुंगेर शहर से की गयी थी॰
झरिया॰रामगढ़ गिरिडीह और पलामू में फैले कोयला खानों में लगभग एक लाख मजदूर कार्यरत थे॰ झरिया अंचल के अधिकतर मजदूर मौसमी थे॰ और खेती का काम निपटने का बाद बड़ संख्या में खानों की ओर चले आते थे॰ अधिकांश मजदूर तो स्थानीय आदिवासी और अन्य देहाती गरीब थे॰ फिर भी मध्य प्रांत और संयुक्त प्रांत से भी कुछ मजदूरों की भर्ती की गई थी॰ गिरिड़ीह अंचल में जहां प्रमुख कोयला खानों के मालिक ईस्ट इंडिया रेलवे थी॰ मोटामोटी स्थानीय लोगों के बीच से स्थायी बहाली की प्रथा थी॰
अभ्रक उद्योग विकासोन्मुख था॰ 1915 ई तक केवल हजारीबाद जनपद में ही 40 खदान थे॰जिनमे 10000 मजदूर कार्य़रत थे॰ गया और मुंगेर के खदानों में भी काफी लोग कार्यरत थे॰ बिहार का लाल अभ्रक दुनिया भर में सबसे अच्छे किस्म का अभ्रक माना जाता है॰ विद्युत उद्योग के लिए यह अपरिहार्य माना जाता है॰
नील उद्योग भी महत्वपूर्ण था॰ पूरे उत्तर बिहार में विशेषकर चंपारण और मुजफ्फरपुर में नील की खेती अधिक होती थी॰ 1917 ई में चंपारण मे नील की 24 कोठियां थी॰ जो नील का उत्पादन करती थी॰ किंतु निलहे बागान की 24 कोठियां थी॰ जो नील का उत्पादन करती थी॰ फलतः महात्मा गांधी के चंपारण में सत्याग्रह करना पड़ा॰ अग्रेजों के किसानों को कुछ राहत दी॰ घृणित तीन कठिया प्रथा बंद कर दी गई॰जिसके अनुसार किसानों को अपनी जमीन के तीन कट्ठे में नील उत्पादन के लिए विवश किया जाता था॰
1922 ई तक बिहार के चीनी उद्योग भलीभांति स्थापित हो चुका था॰ रास्ज में ईख उत्पादकों की सहकारी समितियां स्थापित हो चुका थी॰ इस समय तक बिहार में चीनी की तीस मिले थी॰
प्रथम विश्वयुद्ध ने शोरे के उत्पादन को भीर प्रोत्साहन दिया॰ बिहार में परिष्कृत शोरे का उत्पादन 1913.14 ई में 185373 मन था दो 1917.18 ई में बढ़कर 230431 मन हो गया॰ प्रथम विश्वयुद्ध के अंत के बाद उत्पादन में पुनः कमी हो गयी॰
प्रथम विश्वयुद्ध काल में ब्रिटेन से कपड़े का आयात कम हो गया॰ फलतः प्रांत में मृत पड़ गये हस्तकरघा उद्योग में नई जान आ गई॰गांधी ने असहयोग आंदोनलन काल मे खादी के प्रयोग पर जोर दिया॰ कांग्रेस ने खादी ग्रामोद्योग

को प्रश्रय दिया॰सभी महत्पूर्ण केंद्रों में खादी भंडाप खोले गए खादी प्रदर्शननियों का भी आयोजन किया जाने लगा॰ खादी कांग्रेसियों की नियमित पोशाक बन गई॰ सरकार ने भी गुलजारबाग में बिहार कुटीर उद्योग खोलने मे सहायता दी॰ बिहार के जिलों में सूती दरियांए कालीन आदि बनाने लगे॰

मेरा यह दुढ विचार कि भारत का उद्धार उसकी नारियों के त्याग एवं ज्ञानलोक पर निर्भर करता था॰ . महात्मा गांधी एक ओर यदि यह चाहते थे कि भारत की नारियां अधविश्वासएकुसंस्कारएअशिक्षा एव अज्ञान के मोह से मुक्त होकर समाज एवं राष्ट्र के कर्मक्षेत्र में अपना उचित स्थान ग्रहण करते॰ तो दूसरी ओऱ उनका यह भी विचार था॰ नारी में स्नेहएदया ममताएत्यागएतितिक्षा आदि जो सहज गुण है॰ उनका वे परित्याग न करें॰

मूलतः पुरुष और नारी के एक होने पर भी गांधीजी यह मानते ते कि बाह्य रूप में दोनों के कर्तव्य भिन्न है॰ मातृत्व के कर्तव्य पालन के लिए गुण अपेक्षित है॰ उनका पुरुश मे होना आवश्यक नहीं है॰

स्थूल रुप से दोनों के कर्तव्यों का उल्लेख गांधीजी ने अपने हरिजन पत्र में इस प्रकार किया था॰ नारी अनिवार्य रुप से गृहस्वामिनी है॰ पुरुष रोटी कमानेवाला है॰ नारी का काम हैए उस रोटी को रखना और बांटना॰उसे अवेक्षक की जो संज्ञा दी गई है॰ वह यथार्थ है॰ जाति के शिशुओं का लालन.पालन करना उसका विशिष्ट व अनन्य जन्मसिद्ध अधिकार है॰ बिना उसके अवेक्षण के जाती का अवश्य ही नाश हो जायेगा॰

इस प्रकार नारी का कर्मक्षेत्र चाहे जो भी होए उसके जीवन का केंद्रबिंदु गृह परिवार ही होना चाहिएएनारी स्वाभाव स्नेहशील एव शांतिमयी होती है॰ अपनी अन्तर्निहित शक्तियों को सहज भाव से उदबुद्ध करके य़दि नारियां स्वधर्मनिष्ठ हो जायेंएतो उनके द्वारा संपूर्ण मानव का कल्याण.साधन हो सकता है॰ वास्तविक जगत में जो नारी.शक्ति पुरूष को परिचालित करती है॰ वह यदि विपथगामिनी हो जाये॰ तो इसका परिणाम दोनों के लिए अमंगलजनक सिद्ध हो सकता है॰

गांधी के शब्दों में नर और नारी के लिए हीनताव्यक्त है कि नारियों के घर के लिए काम काज छोडकर फस घर की रक्षा के हेतु बंदूक धारन करने को कहा जाये॰ इसका अर्थ होगा बर्बरता की ओर लौट चलना॰ अपना गृह को सुव्यवस्थित रुप से रखने में उतनी हबी बहादुरी है॰ जितनी बाह्य आक्रमण से उसकी रक्षा करने में॰

हिंसाए द्वेष एवं शीतयुद्ध की उत्तेजना एवं विभीषका से पूर्ण समस्त विश्व की दृष्टि और एशिया महादेश के उपर लगी हुई है॰ इस महादेश में आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व मानव.मैत्री एवं करुण के वाणी उद्घोषित हुई थी॰

इस प्रकार नारी का बिहार के आधुनिक उद्योग के विकास में नारीयों का महत्व रहा है॰

संदर्भ सामग्रीः

1॰ शर्मा एएन वीमेन एंड सोसाइटी॰नवजीन प्रकाशनएअहमादाबाद भाग.1॰1969॰पृ 8
2॰ दी वीमेंन इन गांधीजी लाइफ.एलीनर मार्टन
3॰ दि स्प्रिटस पिल्ग्रिमेज.मीरा बहन
4॰ गांघी फाटर विदाउट ए स्वोर्ड.जिनेट इंदन
5॰ ए मेसेज ऑफ महात्महा गांधी सं॰यू॰एस मोहन राव
6॰ महात्मा गांधी हैड्रड ईसर्स एसएराधाकृष्णनन
7॰ गांधी.ज्योफ्रे ऐश
8॰ इंडा वे टू फ्रीडम मार्गरिट वर्क व्हाईंट
9॰ हाफ वे टू फ्रीडम.मार्गरिट वर्क व्हाईंट
10॰ गाधीझी इन इंडिया विलेजेज महादेव देसाई
11॰ कांग्रेस का इतिहास. डॉ वी॰पट्टाभि सीतारामय्या
12॰ बापू के पत्र नवजीवन ट्रस्ट
13॰ भारतीय स्वाधीनता संग्राम का इतिहास इंदु विधवातरस्पाई॰